कौशलों का अर्जन या अभिग्रहण (Acquisition/Capture of Skills) :—

एक कौशल विशेष व्यवहारों का वह समुच्चय होता है जिसमे एक विशेष पदो या सोपानो के तन्त्र का विद्यार्थी सुनिश्चित क्रम में अनुप्रयोग करते हुए अधिगम करता है। अधिगम की अपेक्षित सफलता कौशल की संपादन दक्षता पर निर्भर करती है अर्थात कोई विद्यार्थी जितनी कम त्रुटियो के साथ कौशल का संपादन कर लेता है उसे उस कौशल मे उतना ही दक्ष या प्रवीण माना जाता है। कौशलों के अर्जन में तीनो अधिगम अनुक्षेत्रो अर्थात संज्ञानात्मक, भावात्मक एवं क्रियात्मक सम्मिलित प्रभाव रहता है।

जब कोई व्यक्ति या विद्यार्थी किसी नए कौशल का अधिगम करता है तब उस कौशल का विकास अधिगम की तीन अवस्थाओ पर आधारित होता है। ये तीन अवस्थाए निम्न है—

1- संज्ञानात्मक (Cognitive)
2- साहचर्य या सहचारी (Associative)
3- स्वायत्त (Autonomous)

कौशल की प्रत्येक अवस्था की अपेक्षित प्रतिपुष्टि, प्रदर्शन एवं अभ्यास की विभिन्न विशेषताएँ होती है।

1- संज्ञानात्मक (Cognitive) — कौशल अर्जन की संज्ञानात्मक अवस्था के अन्तर्गत अधिगम किए जाने

Scanned with CamScanner

वाले कौशल की प्रारम्भिक अभिज्ञान एवं अवबोध किया जाता है। इस अवस्था में विद्यार्थी इस बिन्दु पर केन्द्रित रहता है कि उसे क्या करना है? इस अवस्था में की जाने वाली अधिगम गतिविधियों में विद्यार्थी को अधिक कार्य निष्पादन या अभ्यास की अपेक्षा देखने, विचार करने, विश्लेषण करने, तर्क करने, निर्णय एवं मानसिक चिंतन या प्रारूप बनाने आदि में अधिक केन्द्रित होना चाहिए। इस अवस्था में कौशल अर्जन से सम्बन्धित गहन एवं अच्छी समझ के विकास का ध्येय निहित रहता है। इस अवस्था में निम्न बिन्दुओं पर अधिक ध्यान दिया जाना चाहिए -

- ⇒ इस अवस्था में सबसे पहले एक कौशल से सम्बन्धित अनुभव विद्यार्थी को दिया जाता है।
- ⇒ विद्यार्थी को कौशल से सम्बन्धित आवश्यक जानकारी या अनुदेशन दिया जाता है।
- ⇒ इस अवस्था में पर्याप्त प्रदर्शन आवश्यक है।
- ⇒ जटिल कौशलों को छोटे छोटे उप कौशल में विभाजित करके प्रस्तुत किया जाना चाहिए।
- ⇒ शिक्षक का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों को अभिप्रेरित करना, अनुदेशनों को सूचनात्मक प्रदान करना, रचनात्मक प्रतिपुष्टि प्रदान करना एवं प्रदर्शन करना होना चाहिए।

2- साहचर्य या सहचारी (Associative) :- कौशल

अर्जन की साहचर्य अवस्था में विद्यार्थी अधिगम कैसे किया जाए के अभ्यास के विचार पर वास्तविक रूप से केन्द्रित रहता है। विद्यार्थी को किसी पाठ या कौशल में निष्पादन की योग्यता को इस अवस्था में अभ्यास द्वारा बढ़ाने का

Scanned with CamScanner

का प्रयत्न किया जाता है। यहा यह आवश्यक नही है कि विद्यार्थी किसी कौशल मे पूर्ण उत्कृष्ट निष्पादन करने लगे किन्तु यह आवश्यक है कि उसमे कौशल के सम्पादन मा प्रदर्शन कैसे किया जाए, की समझ होनी चाहिए। अधिकांश विद्यार्थी इस अवस्था मे एक दीर्घ समय अवधि के लिए रुक जाते है और अगली अवस्था में जाने के लिए अपेक्षित प्रगति नही कर पाते है। इस अवस्था को दीर्घ एवं व्यापक माना जाता है जिसकी मुख्य विशेषता अत्यधिक अभ्यास है। इस अवस्था मे निम्न क्रियाए एवं कार्य निहित माने जाते है —

- ⇒ इस अवस्था को एक अभ्यास अवस्था के रूप मे जाना जाता है।
- ⇒ कौशल की आवृत्ति में मानसिक एवं पेशीय गति को एक समय मे होना चाहिए।
- ⇒ सम्पूर्ण अवस्था में आवृत्तियो की संख्या अधिक होने पर त्रुटियो को न्यूनतम होना चाहिए तथा कौशल को परिष्कृत होना चाहिए।
- ⇒ किसी कौशल में परिष्कार लाने मे प्रतिपुष्टि एक अपेक्षित सहायता के रूप में दिया जाना चाहिए तथापि आन्तरिक प्रतिपुष्टि एक कौशल को प्रगतिशील बनाने में अधिक उपलब्ध रहती है।
- ⇒ कुछ विद्यार्थी या अधिगमकर्ता इस अवस्था से निकलकर अगली अवस्था में कौशल की जटिलता के कारण कभी पहुच नही पाते है।

Scanned with CamScanner

3- स्वायत्त (Autonomous) :—

स्वायत्त अवस्था में कौशल अर्जन के सभी परिभ्रमण कालो का क्रिया-वपन एक कौशल में स्वत: बिना किसी विराम के और इस चिंतन के इसे कैसे करना है? या अगले क्रम में क्या करना है? उत्पन्न के होने लगता है। यह एक विकसित स्तर का निष्पादन होता है जहा कोई विद्यार्थी किसी कौशल का निष्पादन धाराप्रवाह एवं सहज बोध से करने लगता है और जहा बाहरी प्रभाव परिणाम को प्रभावित नही कर पाता है। कोई विद्यार्थी किसी कौशल के उद्देश्य को दीर्घ समय में प्राप्त कर इस अवस्था तक पहुच पाता है जबकि बहुत विद्यार्थी इस अवस्था तक कभी पहुच नही पाते है। विद्यार्थियो के यहा तक नही पहुच पाने के कई कारण हो सकते है लेकिन मुख्य रूप से प्रशिक्षण ~~अवस्था~~ आवश्यकता, कौशल या पाठ की जटिलता और अभिप्रेरणा के आभाव को माना जाता है। इस अवस्था में निम्न क्रियाए एवं कार्य निहित माने जाते है—

- ⇒ उपकार्यो का एक अनुक्रम मे साथ किसी एक कौशल के निष्पादन मे धाराप्रवाहिता एवं निपुणता प्रदान करता है। Proficience Proficiency
- ⇒ इस अवस्था में विद्यार्थी उच्च संज्ञानात्मक क्रियाओ का साहचर्य कौशल के साथ करने मे सक्षम हो जाता है।
- ⇒ विद्यार्थी इस स्वायत अवस्था मे प्राय: अभ्यास द्वारा कौशलो मे प्रवीणता लाते है और यह परिस्थितिया उन्हे खेल के समय उद्दीपित करती है।
- ⇒ किसी कौशल का स्वायत अवस्था मे प्रशिक्षण सामान्य आशय कौशल मे धीरे धीरे परिमार्जन लाने से है। इसलिए इसके प्रशिक्षण मे उच्च स्तर की अभिप्रेरणा की ~~अवस्था~~ आवश्यकता मानी जाती है।

Scanned with CamScanner

मूल्य (Value) — तनाव, अराजकता, हिंसा व अशान्ति ने इस 21 वी शताब्दी निरन्तर शीर्षित हो रही है आवाम को दी जाने वाली शिक्षा या तालीम पर निश्चय ही एक गंभीर प्रश्न चिह्न लगा दिया है। शिक्षा में संज्ञानात्मक विकास को अधिक तवज्जो प्रदान किया जा रहा है। किन्तु मानव एवं समाज के लिए सबसे अधिक वांछनीय भावात्मक विकास की उपेक्षा की जा रही है। ऐसे में सामाजिक व सांस्कृतिक अन्तर्विरोधों आपसी द्वन्द्व व अन्य विध्वंसकारी प्रवृत्तियों के रूप में व्याप्त प्रमुख चुनौतियों का सामना करने हेतु एक मूल्यपरक शिक्षा अनिवार्य है।

प्रत्येक समाज एवं देश ने विद्यार्थियों के सर्वोत्तम और सर्वोत्कृष्ट के लिए मूल्यपरक पाठ्यक्रम को नियोजित किया हुआ है। जहा प्रत्येक विषय के अधिगम के माध्यम से कुछ अन्तर्निहित मूल्यों का विकास करने का प्रयास किया जाता है। शिक्षा के आधारभूत स्तम्भों में से एक शिक्षक का यह कर्त्तव्य माना जाता है कि वह पाठ्य पुस्तकों में दिए गए मूल्यों का महत्व समझे, उन्हे अपने जीनचर्या व व्यवहार का एक अभिन्न हिस्सा बनाए, फिर विद्यार्थियों के दैनिक व्यवहार तथा जीवन में समाविष्ट करने का प्रयास करे।

शिक्षक शिक्षा, विद्यार्थी और अधिगम प्रक्रिया को किस प्रकार मूल्यपरक ~~बनाए~~ बनाया

जाए कि प्रत्येक अधिगम के माध्यम से विद्यार्थी में अन्तर्भूत मूल्यों का भी विकास किया जा सके तथा विद्यार्थियों के दैनिक व्यवहारों एवं आचरणों को मूल्यों के द्वारा नियन्त्रित व निर्देशित किया जा सके। शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के माध्यम से किस प्रकार मूल्यों की शिक्षा ~~तथा इनका विकास~~ दिया जा सकता है।

मौजूदा पाठ्यक्रम में शामिल मूल्य – प्रत्येक कक्षा के लिए एक निर्धारित पाठ्यक्रम होता है और पाठ्यक्रम में निश्चित विषयों, पाठ्यक्रियाओं एवं सह पाठ्यचारी क्रियाओं का विवरण रहता है। प्रत्येक विषय के शिक्षण तथा पाठ्यचारी एवं गतिविधियों या क्रिया कलापों में प्रतिभाग व सहभागिता के माध्यम से विद्यार्थियों में अधिगम के साथ मूल्यों का विकास किया जा सकता है। इनमें से दो प्रमुख है–

(i) **प्रार्थना सभा** – सम्भवतः प्रत्येक शिक्षण संस्थान का कार्य प्रारम्भ प्रार्थना के माध्यम से होता है। प्रार्थना स्थल पर शिक्षक एवं विद्यार्थी की उपस्थिति में मातृभाषा में प्रार्थनाओं का आयोजन एवं शांत पूर्ण वातावरण में किया जाता है। यहां पर प्रार्थना के अतिरिक्त अन्य क्रियाएं जैसे कहानी वाचन, नैतिक उपदेश, समसामयिक सन्दर्भों में चर्चा आदि की जाती है। इनके माध्यम से विद्यार्थियों में अपेक्षित मूल्यों का विकास किया जा सकता है।

(ii) **विभिन्न आधारभूत विषयों के शिक्षण द्वारा** – प्रत्येक कक्षा के पाठ्यक्रम में कुछ निश्चित आधारभूत विषय रहते हैं और प्रत्येक विषय के

Scanned with CamScanner

शिक्षण व विषयवस्तु का अपना महत्व व उपयोगिता होती है। आधारभूत विषयों (सामाजिक अध्ययन, विज्ञान, साहित्य भाषा आदि) में शामिल प्रत्येक विषय के शिक्षण के माध्यम से अधिगम के साथ-साथ मूल्यों की भी शिक्षा जा सकती है। इन विषयो के शिक्षण अधिगम द्वारा निम्न मूल्यो का विकास किया जा सकता है जैसे - सहयोग, पारस्परिक सम्मान, ईमानदारी, एकता, अनुशासन, संवेदनशीलता, सामाजिक उत्तरदायित्व, राष्ट्रीयता, अंतर्राष्ट्रीयता, -माम, स्वतन्तता, भाईचारा, समानता, सहयोग, सद्भावना आदि।

Scanned with CamScanner